पवनतनय के चरित सुहाए। जामवंत रघुपतिहि सुनाए ।।
सुनत कृपानिधि मन अति भाए। पुनि हनुमान हरषि हियँ लाए ।।
कहहु तात केहि भाँति जानकी। रहति करति रच्छा स्वप्रान की ।।
दो०-नाम पाहरू दिवस निसि ध्यान तुम्हार कपाट।
लोचन निज पद जंत्रित जाहिं प्रान केहिं बाट।। 30 ।।
चलत मोहि चूड़ामनि दीन्ही। रघुपति हृदयँ लाइ सोइ लीन्ही ।।
नाथ जुगल लोचन भरि बारी। बचन कहे कछु जनककुमारी ।।
अनुज समेत गहेहु प्रभु चरना। दीन बंधु प्रनतारति हरना ।।
मन क्रम बचन चरन अनुरागी। केही अपराध नाथ हौं त्यागी ।।
अवगुन एक मोर मैं माना। बिछुरत प्रान न कीन्ह पयाना ।।
नाथ सो नयनन्हि को अपराधा। निसरत प्रान करहिं हठि बाधा ।।
बिरह अगिनि तनु तूल समीरा। स्वास जरइ छन माहिं सरीरा ।।
नयन स्त्रवहिं जलु निज हित लागी। जरैं न पाव देह बिरहागी ।।
सीता कै अति बिपति बिसाला। बिनहिं कहें भलि दीनदयाला ।।
दो०-निमिष निमिष करूनानिधि जाहिं कलप सम बीति।
बेगि चलिय प्रभु आनिअ भुज बल खल दिल जीति।। 31 ।।
सुनि सीता दुख प्रभु सुख अयना। भरि आए जल राजिव नयना ।।
बचन कायँ मन मम गति जाही। सपनेहुँ बूझिअ बिपति कि ताही ।।
कह हनुमंत बिपति प्रभु सोई। जब तव सुमिरन भजन न होई ।।
केतिक बात प्रभु जातुधान की। रिपुहि जीति आनिबी जानकी ।।
सुनु कपि तोहि समान उपकारी। नहिं कोउ सुर नर मुनि तनुधारी ।।
प्रति उपकार करौं का तोरा। सनमुख होइ न सकत मन मोरा ।।
सुनु सुत तोहि उरिन मैं नाहीं। देखेउँ करि बिचार मन माहीं ।।
पुनि पुनि कपिहि चितव सुरत्राता। लोचन नीर पुलक अति गाता ।।
दो०-सुनि प्रभु बचन बिलोकि मुख गात हरषि हनुमंत।
चरन परेउ प्रेमाकुल त्राहि त्राहि भगवंत।। 32 ।।
बार बार प्रभु चहइ उठावा। प्रेम मगन तेहि उठब न भावा ।।
प्रभु कर पंकज कपि कें सीसा। सुमिरि सो दसा मगन गौरीसा ।।
सावधान मन करि पुनि संकर। लागे कहन कथा अति सुंदर ।।
कपि उठाइ प्रभु हृदयँ लगावा। कर गहि परम निकट बैठावा ।।
कहु कपि रावन पालित लंका। केहि बिधि दहेउ दुर्ग अति बंका ।।
प्रभु प्रसन्न जाना हनुमाना। बोला बचन बिगत अभिमाना ।।

जीते जी रक्तदान मरणोपरान्त नेत्रदान